



## International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476

IJHS 2021; 7(2): 42-44

© 2021 IJHS

[www.homesciencejournal.com](http://www.homesciencejournal.com)

Received: 28-03-2021

Accepted: 30-04-2021

अंकिता चौरसिया

आहार विशेषज्ञ, गृह विज्ञान विभाग,  
सरकारी गर्ल्स आर्ट्स कॉलेज,  
कोटा, राजस्थान, भारत

### डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शिक्षा दर्शन एवं शैक्षिक विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिता व उपदेयता का अध्ययन

अंकिता चौरसिया

सारांश

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने निश्चित समय सीमा, सीमित, साहित्य परिस्थितियों तथा अन्य कारणों के होते हुए भी अपनी मेहनत एवं लागत को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यह प्रयास शोधकर्ता का प्रथम प्रयास है। गलतियाँ होना स्वाभाविक है। अतः इसमें कतिपय कामियाँ पाई जानी संभव है। इस शोधकार्य में हुई त्रुटियों के लिए शोधकर्ता क्षमा प्रार्थी है। अतः भावी शोधकर्ताओं द्वारा कमियों को पहचान कर दूर किया जा सकता है।

**कुटुम्बशब्द:** डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, शिक्षा दर्शन, शैक्षिक, वर्तमान परिप्रेक्ष्य

1. प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति को शारिरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करती है। इसके माध्यम से वर्तमान जीवन और आने वाली पीढ़ी के जीवन को सुगम एवं आनन्दायक बनाने में सहायता मिलती है। सफल जीवन के लिए शिक्षा बहुत उपयोगी है। प्राचीन समय से ही हमारी शिक्षा व्यवस्था में मुल्यों एवं कौशल आधारित शिक्षा को एक वृक्ष की भाँती पौषित किया है, जिससे वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ भावी पीढ़ी को भी उसका लाभ प्राप्त हो सके। वर्तमान समय में शिक्षा के विविधता पायी जाती है। पाठ्यक्रम की अधिकता तथा उसमें विभिन्नता होने के कारण कौशल आधारित शिक्षा का चयन करने में कठिनाई आती है। विज्ञान और तकनीक के इस युग में शिक्षा के समक्ष अनेकानेक चुनौतियाँ प्रस्तुत की है। शिक्षा ज्ञान के अनवरत विकास से लाभान्वित होकर निरन्तर परिवर्तनशील बनी रही है। कौशल आधारित शिक्षा व्यक्तिगत होने के साथ-साथ समाज व राष्ट्र से भी संबन्धित होते हैं तब व्यक्ति में अन्तर्नीहित सम्भावनाओं को विकसित कर उसे पूर्ण मानव बनाने का प्रयास किया जाता है। तो वह क्रियात्मक या व्यक्तिगत होती है। परन्तु व्यक्ति में निहीत क्रियात्मकता का प्रयोग समाज व देश के हित में हो तो वह सामाजिक क्रियात्मकता होती है। क्रियात्मकता व्यक्ति व समाज की सोच विचार व आचरण में प्रकट होती है। भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था क्रियात्मक कार्य को करने में विमुख हो चुकी है। इस कारण छात्र न तो पूर्ण रूप से शिक्षित हो पाता है और न ही कौशल अर्जित कर पाता है। शिक्षा में क्रियात्मकता, स्पनात्मकता व सकारात्मकता बनने के लिए नये विचारों को प्रयोग व व्यवहार में बदलने की आवश्यकता है, जिसके लिए अब्दुल कलाम के शिक्षा दर्शन और शैक्षिक विचारों को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में निवेश की इच्छा रखिए, खासकर अपनी कल्पना की। लक्ष्यों को आसानी से हासिल करने के लिए शिष्टाचार के नियमों को सिखना आवश्यक है जिससे बालक स्वयं पराजय की ओर जाने वाले रास्ते से बच सकते हैं। यदि बालक स्वयं चेतना के साथ क्रियात्मकता को बाल्यावस्था से ही सिखेगा तो जीवन में उसे निश्चित ही सफलता मिलेगी। साथ ही साथ जब वह अपनी इच्छा व जिम्मेदारी से कोई काम अपने हाथ में लेगा तो वह एक अच्छा इन्सान बन पायेगा।

शिक्षा से मानव का व्यक्तित्व सम्पूर्ण, विनम्र और संसार के लिए उपयोगी बनता है। सही शिक्षा से मानवीय गरिमा, स्वाभिमान और विश्व-बंधुत्व में बढ़ोतरी होती है। ये गुण शिक्षा के आधार होते हैं। अतः शिक्षा का उद्देश्य है सत्य की खोज। इस खोज का केन्द्र अध्यापक होता है, जो अपने विद्यार्थियों को शिक्षा से माध्यम से जीवन में और व्यवहार में सच्चाई की शिक्षा देता है। छात्रों को जो भी कठिनाई हो, जो भी जिज्ञासा हो, जो वो जानना चाहते हैं, उन सब के लिए उनका अध्यापक पर ही निर्भर करते हैं। उनके लिए उनका अध्यापक एक तरह से एन्साइक्लोपीडिया है जिसके पास सभी प्रश्नों के उत्तर हैं। यदि शिक्षक के मार्गदर्शन में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को उसके वास्तविक अर्थ में ग्रहण कर मानवीय गतिविधि के प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रसार करता है तो मौजूदा 12वीं सदी में दुनिया

Corresponding Author:

अंकिता चौरसिया

आहार विशेषज्ञ, गृह विज्ञान विभाग,  
सरकारी गर्ल्स आर्ट्स कॉलेज,  
कोटा, राजस्थान, भारत

काफी सुन्दर हो जाएगी। आज की युवा पीढ़ी ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहती है जो उसके खोजी और सृजनशील मन को सबल बनाने के साथ-साथ उसके सामने चुनौती प्रस्तुत करें। देश का भविष्य उन पर टिका हुआ है। वे वर्तमान में शिक्षा प्रणाली के संबंध में सोच विचार करना चाहते हैं। एक अच्छी शिक्षा प्रणाली में ऐसी क्षमता होनी चाहिए जो छात्रों की ज्ञान प्राप्ति की तीव्र जिज्ञासा को शान्त कर सके। शैक्षणिक संस्थाओं को ऐसे पाठ्यक्रम बनाने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए जो विकसित भारत की सामाजिक और प्रौद्योगिकी संबंधी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो। वर्तमान पाठ्यक्रम में विकास कार्यों की गतिविधियों को अनिवार्यतः स्थान दिया जाना चाहिए। ताकि ज्ञान समाज की भावी पीढ़ी पूरी तरह से सामाजिक परिवर्तन को सभी पहलुओं के अनुकूल हो सके। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने दो शताब्दी तक अन्तरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में तथा लगभग 20 वर्षों तक रक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में दृष्टिगत होकर कार्य किया। इस अवधि में अनेक सफलताएँ व विफलताएँ उनके सम्मुख आईं। इस बीच पृथ्वी को लेकर अग्नि तक अनेक विसाइलो का सफल विकास हुआ, जिससे यह स्पष्ट प्रमाणित हो गया की सपना अच्छे प्रबंध-कौशल से यह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। डॉ. अब्दुल कलाम की रक्षा वैज्ञानिक के रूप में उनकी अमूल्य व निष्ठापरक सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए भारत सरकार ने सन् 1981 में पद्म भूषण, सन् 1990 ई में पद्म विभूषण और सन् 1998 ई में देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न प्रदान कर उन्हें अलंकृत किया। रक्षा वैज्ञानिक के क्षेत्र में जब भी किसी का नाम लिया जाएगा तो पुरोधा भारत रत्न रक्षा वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का नाम सर्वोपरी होगा। भारत राष्ट्र उनकी अपरिमित सेवाओं के लिए सर्वदा ऋणी कृतज्ञ रहेगा। उनकी बाते नयी दिशा दिखाने वाली थी, उन्होंने करोड़ों आँखों को बड़े सपने देखना सिखाया। वह कहते थे वह नहीं जो आप नींद में देखते हैं, यह तो एक ऐसी चीज है जो आपको नींद ही नहीं आने देती। उनका मानना था की छोटी सोच सही नहीं होती है। जितना मुमकिन हो उतने खव्वाब देखीए। तरक्की का उनका खुव्वाब शहरों से नहीं बल्कि गाँव की पंचायतों से शुरू होता था।

## 2. शोध अध्ययन के उद्देश्य

“डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम के शिक्षा दर्शन व शैक्षणिक विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिता व उपादेयता का अध्ययन”।

## 3. शोध अध्ययन की परिसीमाएँ

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन डॉ. अब्दुल कलाम के दार्शनिक एवं शैक्षणिक विचारों तक ही सीमित अध्ययन करेंगे।
2. प्रस्तुत शोध में डॉ. अब्दुल कलाम के विचारों की वर्तमान में उपयोगिता का ही अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध में शोध अध्ययन विधि – ऐतिहासिक अनुसंधान प्रयोग किया जाएगा।
3. प्रस्तुत अध्ययन में डॉ. अब्दुल कलाम के सभी साहित्यों का अध्ययन न करके महत्वपूर्ण ग्रंथों का ही अवलोकन किया करेंगे।

## 4. शोध निष्कर्ष

### 4.1 अमेरिका मार्केटिंग सोसायटी के अनुसार

“अध्ययन में परिणामों में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के समक्ष पर्याप्त विस्तार में प्रस्तुत करना और परिणामों को इस प्रकार व्यवस्थित करना कि प्रत्येक पाठक तथ्यों को समझने और निष्कर्षों की वैधता निर्धारण करने में समर्थ हो सके।”

डॉ. अब्दुल कलाम ने आधुनिक शिक्षा क्षेत्र में अपूर्व योगदान दिया है। शिक्षा दर्शन एवं मनोवैज्ञानिक मूल्यों के विकास में उनके साहित्य में निहित तथ्य अत्यन्त सराहनीय है।

### 4.2 दर्शन

1. धार्मिक एकता पर बल देते हुए धार्मिक क्रिया कलापों में

- नियमितता को महत्वपूर्ण मानते हैं।
2. विपत्ति के समय कठोर परिश्रम करनी चाहिए विपत्ति हमेशा आत्म विश्लेषण का अवसर प्रदान करती है।
3. समस्या के समाधान हेतु प्रयत्न करने वालों की हार नहीं होती है।
4. अपने माता-पिता का आशीर्वाद बहुत महत्वपूर्ण है और माता-पिता ही हमारे आदर्श हैं।
5. मनुष्य को अहंकार का त्याग करना अत्यन्त आवश्यक है।
6. सच्चे मनुष्य में परोपकारिता, मानवतावादी एवं धर्म निरपेक्षता के गुण होते हैं।
7. अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मेहनत करो और ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करो।
8. जीवन में सादगी व विचारों में उच्चता होनी चाहिए।
9. मनुष्य में निर्णय शक्ति होनी चाहिए जिससे वह तुरन्त निर्णय ले सकें।
10. जो लोग जिम्मेदार, सरल, ईमानदार तथा मेहनती होते हैं, उन्हें इश्वर द्वारा विशेष सम्मान मिलता है। क्योंकि वे इस पृथ्वी पर उसकी श्रेष्ठ रचना हैं।
11. कम से कम दो गरीब बक्तियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनकी शिक्षा प्राप्ति में मदद करो।
12. किसी के जीवन में उजाला लाओ।
13. दूसरों का आशीर्वाद प्राप्त करों, और अपने माता-पिता की सेवा करो, बड़ों तथा शिक्षकों का आदर करो और अपने देश से प्रेम करो, इनके बिना जीवन अर्थहीन है।
14. ईश्वर की सभी रचनाओं से प्यार करो।
15. देना सबसे उच्च व श्रेष्ठतम गुण हैं, परंतु पूर्णता देने के लिए उसके साथ क्षमा भी होनी चाहिए।
16. हमारे अन्दर ईश्वरीय सुन्दरता का प्रवेश होना चाहिए।
17. प्रत्येक क्षण रचनात्मकता का एक क्षण है। उसे व्यर्थ मत करो।
18. धैर्य तथा सहिष्णुता शक्ति है। उसे खोने मत दो।
19. प्रकृति से सीखें, जहाँ सब कुछ छिपा हुआ है और अपने जीवन को उद्देश्य पूर्ण तथा अर्थ पूर्ण बनाओ।।
20. ये आँखे इस दुनिया को फिर नहीं देख पाएंगी। अपना बेहतरीन देन का प्रयास करो।

## 5. शैक्षणिक विचार

कलाम का शैक्षणिक दृष्टिकोण तार्किक, कौशल व वैज्ञानिक दर्शन पर आधारित है। “मिसाइल मैन” के नाम से विख्यात वैज्ञानिक राष्ट्रपति भारतीय समाज की सम्पन्नता को समाज, राजनीति, शिक्षा, उद्योग इत्यादि में क्रान्तिकारी प्रगति के आधार पर परिवर्तन देखते हैं, जहाँ मन्द तीव्र गति है। इस प्रकार का शैक्षणिक दर्शन भारतीय शिक्षा के वर्तमान स्वरूप की गुणवत्ता का विकास हेतु अति उत्तम है।

4 लाख से अधिक विद्यालयी बच्चों से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित कर कलाम ने नई पीढ़ी को नए सपने व नई राह दिखाई है साथ ही उनके नए विचारों को जानकर शिक्षा दर्शन में उन्हें शामिल किया है। नई सह शताब्द में कलाम ने शिक्षा में सुधार हेतु निम्न मत, दृष्टिकोण तर्क व लक्ष्य रखे हैं। जो मंद गति से विकासशील भारतीय समाज के लिए वरदान है।

### 5.1 कलाम का “विकसित भारत का सपना” के चार स्तम्भ हैं

1. उद्यमशीलता की गुणवत्ता में विकास हो।
2. युवा अनुसंधानकर्ता बनें व न्योन्मेष करें एवं गिजासु बने।
3. सरकार के कार्यों के आंकन को लेकर सक्रिय अभिस्तिति का विकास करे।
4. नागरिक अधिकारों व कर्तव्यों का पालन करें। कलाम ने विद्यार्थियों के लिए एक शपथ तैयार की जिसे विद्या अध्ययन के दौरान विद्यार्थी ग्रहण करेगा।
5. हर शिक्षित व्यक्ति 10 अशिक्षितों को शिक्षित व साक्षर

बनाएगा।

6. व्यक्ति किसी धर्म, जाति व भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं करेगा।
7. पुरुष प्रधान समाज स्त्री शिक्षा एवं अधिकारों को महत्व देंगे।
8. शारीरिक व मानसिक वाधिता से युक्त बच्चों व व्यक्तियों का समाज व परिवार में आदर व समन्वयन करें ताकि "Knowledge Society" समावेशित समाज हो सके।

#### 6. सन्दर्भ

1. बुच. एम. बी: थर्ड सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, वोल्यूम। 1978 – 1983
2. बुच. एम. बी: थिपथ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, वोल्यूम। 1988 – 1992
3. राजस्थान में शिक्षा: सम्प्राप्तियों एवं सम्भावनाएँ। अनुसंधान 1975 – 1988
4. गुड कार्टन बी: एजुकेशन रिसर्च न्यूयार्क ऐटलन सेन्चुरी क्राफ्ट्स 1959।
5. कपिल एच. के.: अनुसंधान विधियाँ एच.पी. भार्गव बुक हाऊस आगरा 1998 – 99।
6. माचवे प्रभाकर व: आधुनिक भारत के विचारक, बिहार, हिन्दी ग्रंथ दफ्तुआर अकादमी पटना, 1975 सुरेन्द्र नारायण।
7. टीचर्स जनरल
8. टीचर्स टुडे – नया शिक्षक
9. राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान – 2005
10. राजस्थान शिक्षा अनुसंधान – 2006
11. शिक्षा समस्या विशेषांक – साहित्य परिचय, 1969
12. शिविरा अक्टूबर – 2002